ENVIRONMENTAL STUDIES

समकालीन हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना का विकास

"Development of environmental consciousness in contemporary Hindi literature"

रतीष वी. सी
सहायक प्रोफसर
हिंदी विभाग
क्राॅइस्ट कॉलेज (स्वायत)
इरिंजालकुडा,
E-mail: rethishvc33@gmail.com

सारांश

आज का युग तेजी रफ़तार में आगे बढ़ रहा है। औद्योकीकरण और शहरीकरण ने पूरे पृथ्वी का नक्शा बदल दिया है। प्राकृतिक आपदाएँ भी बढ़ती आ रही है, इसका असर पूरी पृथ्वी को झेलना पड़ रहा है। यह सदी औद्योगिक और तकनीकी विकास का युग है, परंतु इस विकास ने हमारे पर्यावरण पर गहरी चोट पहुंचाई है। वनों की अनियंत्रित कटाई, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, भूमि का क्षरण, जलवायु परिवर्तन, और जीव-जंतुओं के प्राकृतिक आवासों का विनाश आज के प्रमुख पर्यावरणीय संकट हैं। ऐसे में साहित्यकारों ने इस गंभीर स्थिति को अपने लेखन में मुखरता से प्रस्तुत किया है। उनके अंतर्मन से प्रकृति के प्रति सजगता एवं श्रद्धा का भाव बढ़ा इसी के फलस्वरूप हिंदी साहित्य में भी पर्यावरणीय संकट को लेकर गहरी चिंता और इसके प्रति लोगों

ISSN: 2582 - 2594

में जागरूकता लाने का कार्य साहित्यिक लेखन से संपन्न हुआ। समकालीन हिंदी साहित्य इस दिशा में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

साहित्य और पर्यावरण: पर्यावरण संकट को लेकर समकालीन हिंदी साहित्य में भी उल्लेखनीय योगदान देखने को मिलता है। लेखकों ने अपनी कृतियों से प्रकृति का सौंदर्य, पर्यावरण की पीड़ा और मानव के साथ उसके गहरे संबंधों का वर्णन किया है। पर्यावरण चेतना की आवश्यकता और इसके प्रति लोगों को जागरूक बनाने में साहित्य की भूमिका बढ़ी।कुँवर नारायण, लक्ष्मीनारायण पयोधि, एस. हारनोट की कहानी 'एक नदी तड़पती है', रोहिणी अग्रवाल की आलोचना समकालीन हिंदी उपन्यास और पारिस्थितिकीय संकट इनके लेखन में पर्यावरणीय संतुलन की आवश्यकता और प्रकृति के प्रति मानवीय दृष्टिकोण की झलक मिलती है।

मुख्यशब्द: चेतना- जागृति, मर्यादा- सीमा, पर्यावरण संकट, प्रकृतिपरक कर्तव्य एवं दायित्व, पुर्नजागरण।

प्रस्तावना

पर्यावरणीय संकट की गंभीरता: औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के विस्तार ने प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ा दिया है। लोग प्रकृति का शोषण करकर उसकी चरम सीमा तक पहुंचने का कार्य कर रहे हैं। लोग प्रकृति से एक हत तक नाइन्साफी कर रहे हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण कई क्षेत्र प्राकृतिक आपदाओं, जैसे कि सूखापन, बाढ़, भूस्खलन आदि का सामना कर रहे हैं। पारिस्थितिकी असंतुलन का प्रभाव मानव और पशुजगत के जीवन के सभी क्षेत्रों पर पड़ रहा है। कई वनस्पतियाँ लुप्त होती जा रही है।पर्यावरण का क्षरण, जैव विविधता का संकट, और जलवायु परिवर्तन से संबंधित गंभीर प्रभाव साहित्यकारों की चिंता का विषय बन गए हैं। वे इस विषय पर गहन चिंतन करते आ रहे हैं। इस गंभीर विषय का

आगामी परिणाम से जनता को अवगत कराने का प्रयास लेखन द्वारा वे करते आ रहे हैं।

विभिन्न कवियों के कविता पक्ष को आधार बनाकर समकालीन पर्यावरण परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में आलोचना पर आधारित निष्कर्ष पर पहुंचने का प्रयास किया गया है। कुँवर नारायण की कविता 'एक वृक्ष की हत्या' कविता संदर्भ में हमें देखने को मिलता है कि पेड़ पर्यावरणीय संतुलन समाज और संस्कृति का प्रतीक है, समाज की नींव प्रकृति पर आधारित है, इसी समाज का उत्थान प्रकृति के हर संतुलित स्थिति पर आश्रित है।

एक वृक्ष की हत्या

"अबकी घर लौटा तो देखा वह नहीं था–
वही बूढ़ा चौकीदार वृक्ष
जो हमेशा मिलता था घर के दरवाज़े पर तैनात।
पुराने चमड़े का बना उसका शरीर
वही सख़्त जान
झुर्रियोंदार खुरदुरा तना मैला-कुचैला,
राइफ़िल-सी एक सूखी डाल,
एक पगड़ी फूल पत्तीदार,
पाँवों में फटा-पुराना जूता
चरमराता लेकिन अक्खड़ बल-बूता
धूप में बारिश में
गर्मी में सर्दी में
हमेशा चौकन्ना
अपनी ख़ाकी वर्दी में"[1]

ISSN: 2582 - 2594

प्रस्तु पंक्तियों में कवि कुँवर नारायण ने वृक्ष को एक चौकीदार के रूप में प्रस्तुत किया है, जो हमारे घर, समाज, और पर्यावरण की रक्षा करता है। कविता के माध्यम से, वह उस वृक्ष की अनुपस्थिति का दुःख प्रकट कर रहे हैं, जिसे उन्होंने अपने घर के दरवाजे पर एक सशक्त पहरेदार की तरह हमेशा खड़ा पाया था। कवि ने इस वृक्ष को एक बूढ़े लेकिन ताकतवर और अडिग चौकीदार के रूप में वर्णित किया है, जो हर मौसम में चौकन्ना और सजग खड़ा रहता है। इस वृक्ष का अस्तित्व केवल पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज और संस्कृति का भी प्रतीक है, जो हमें बाहरी खतरों से, जैसे लुटेरों, कायरों और पर्यावरण प्रदूषण से सुरक्षा प्रदान करता है।

आग की पंक्तियों में
"दूर से ही ललकारता, "कौन?"
मैं जवाब देता, "दोस्त!"
और पल भर को बैठ जाता
उसकी ठंडी छाँव में
दरअसल, शुरू से ही था हमारे अंदेशों में
कहीं एक जानी दुश्मन
कि घर को बचाना है लुटेरों से
शहर को बचाना है नादिरों से
देश को बचाना है देश के दुश्मनों से
बचाना है–
नदियों को नाला हो जाने से
हवा को धुआँ हो जाने से
खाने को ज़हर हो जाने से :
बचाना है–जंगल को मरुस्थल हो जाने से,
बचाना है–मनुष्य को जंगल हो जाने से।"[1]

कवि यहाँ पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए कह रहे हैं कि अगर हमने समय रहते अपने जंगलों, नदियों, और हवा की सुरक्षा नहीं की तो इसका दुष्प्रभाव न केवल हमारे पर्यावरण पर बल्कि मानवता पर भी पड़ेगा। अंततः, यह कविता वृक्षों की अहमियत और उनके संरक्षण का आह्वान करती है ताकि हमारी दुनिया प्राकृतिक रूप से जीवित और सुरक्षित रह सके।

अगले संदर्भ में कवि लक्ष्मीनारायण पयोधि ने अपने कविता को 'जंगल' नामक शीर्षक देकर सभी जीव-जंतुओं का मूलाधार जंगल के संरक्षण की ओर संकेत किया है। जंगल है तो आनेवाली पीढ़ी सुरक्षित है, देखा जाए तो आजकल कई वन्य जीवों का वंशनाश होता दिखाई दे रहा है, कई जानवर जंगल से उतरकर शहर, गाँव की ओर आते देखने को मिलता है इनमें जंगली हाथी, मोर, बंदर आदि शामिल है । इन जीवन का संरक्षण गंभीरता से सोचनेवाली बात है, मानव द्वारा जंगल पर होन वाले अनियितंत्र शोषण ही इस समस्या का मुख्य जड़ है। सरकार को इस विषय पर सोचने का समय बीत चुका है। जल्द ही कुछ नये प्रावधान इसपर लागू करना अनिवार्य है। कविता की पंक्तियों के संदर्भ में,

जंगल

"बादलों का प्यार जंगल
आदमी का यार जंगल
फूल-फल देता सभी कुछ
कर रहा उपकार जंगल
मूक है, सहता इसी से
दुश्मनों के वार जंगल"

कविता में जंगल की सुंदरता और उसकी विविधता को भी दर्शाया गया है, जैसे कि टेसू के फूलों के खिलने पर उसका अंगार की तरह दहकना। लेकिन, कारखानों के धुएँ से जंगल की हालत खराब हो रही है, और अगर इसी तरह जंगलों का विनाश होता रहा, तो वह एक दिन मरुस्थल बन जाएगा।

जब कभी टेसू खिले तो
दहकता अंगार जंगल

 ISSN: 2582 - 2594

कारख़ानों के धुएँ से
पड़ गया बीमार जंगल
इस तरह कटता रहा तो
जाएगा बन थार जंगल
आदमी की पाशविकता
भोगने को तैयार जंगल"

कवि जंगल को मानव की निर्दयता का शिकार बताते हुए, उसे बचाने का आह्वान करते हैं। यह कविता पर्यावरण संरक्षण और प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग की आवश्यकता पर जोर देती है ताकि जंगल और उसकी सुंदरता को भविष्य के लिए सुरक्षित रखा जा सके।

समकालीन दौर में उपन्यास के जैसे प्रकृति विमर्श को लेकर कहानी भी आगे की ओर अग्रसर है।एस. आर हारनोट की कहानी 'एक नदी तड़पती है' में विकास के नाम पर बाँधों के निर्माण एवं उससे लोगों के विस्थापन के साथ ही साथ एक नदी के तड़प कर मरने की व्यथा दिखाई गई है। किस प्रकार कम्पनी के बड़े बाबुओं और नेताओं ने आधुनिक यंत्रों के साथ नदी पर बेरहम आक्रमण शुरू कर दिया और नदी तड़प- तड़प कर मरने लगी। कहानी में कथाकार लिखते हैं - "नदी धीरे- धीरे कई मीलो तक घाटियों में जैसे स्थिर व जड़ हो गई थी।

नदी गायब है। एस आर हरनोट कहानी के संदर्भ सभी जानते थे कि प्रधान और विधायक से लेकर ऊपर तक कोई उनकी मदद नहीं करेगा क्योंकि जिस कंपनी को वह काम मिला था वह बहुत बड़ी कंपनी थी जिसने अरबों रुपए इस योजना के लिए लगा दिए थे। उन्हें इससे कोई मतलब न था कि उनके काम से नदी गायब हो रही है, या जंगल नष्ट हो रहे हैं या गाँव की ज़मीन धँस रही है या गरीबी की रोजी-रोटी छीनी जा रही है।

यहाँ खुद कानून ही इस प्रकृति शोषण के लिए प्रोत्साहित कर रहा है, यहाँ स्वार्थपूर्ति की आकांक्षाओं को लेकर वे अंधे होकर अपने देश समाज का बली चढ़ाने खुद तुले हुए हैं।

कहानी मे प्रधान, विधायक, मुख्यमंत्री कोई भी गाँववालों साथ नही थे वे कंपनी

के बलबूत में उनकी मेहमानवाज़ी के लिए उतावले थे।

ग्रामीण जनता आक्रोश में आ गये तो वे अपने पर काबू नही कर पाये देवता के भरोसे पर वे रथ लेकर पुलिसकर्मियों के खिलाफ़ निकले लेकिन उसका नतीजा वेदनाजक हुआ पुलिस ने गोलियां चलायी। पूजारी, दो युवक मारे गये। गाँव के लोग रक्षा के लिए भागे, लेकिन पुलिस ने लाठियों से उन्हें मारा अंत में गाँववाले रथ लेकर गाँव पहुंचे,,,।

देवता पर विश्वास टूट गया, देवता की शक्ति पर अविश्वास करने लगे। लेकिन अंत में पुलिसवाले, कंपनी के लोग अपनी लड़ाई की जीत का जश्न मनाने के बाद सो गये।, दूसरे दिन उनकी जगह पर टूटी बोतलें, फटी वर्दी, कटे बकरे के सिर बरामद हुए। जब पुलिस ने गोलियाँ चलायी तो वही परम शतिजाती देवता लोगों की पीठ पर भाग खड़ा हुआ था।

लेकिन अगले ही दिन यह समाचार सुखियों में था कि उस रात इस हादसे के शिकार हुए ग्रामीणों ने रात को शराब और माँस के उत्सव में मदहोश हुए पुलिस व कंपनी के लोगों पर धावा बोल दिया था और सुबह तक उनका वहाँ कोई नामोनिशान नहीं था।मौका-ए-वारदात से महज कुछ बंदूकें, दस-बीस लाठियां, दर्जनों शराब की टूटी हुई बोतलें, बकरों के कटे सिर बौर उधड़ी खाले और फटी हुई वर्दियों के टुकडे बरामद हुए थे। शायद जिस देवता को पुलिस के आंतक ने भगोड़ा बना दिया था वहीं ग्रामीणों में सामूहिक रूप से प्रकट हो गया था और ग्रामजनों ने अपने आक्रोश से शासन की दमनकारी शक्तियों को तहस-नहस कर दिया था।

प्रस्तत संदर्भ मे प्रकृति का शोषण करने वाले ऊँचे अधिकारियों को भी अपने घुटने टेकने पड़े। गाँववालों की अपनी ज़मीन, नदी के ऊपर आस्था की उम्मीदे थी वे फिर से फूल उठी। चाहे जितने भी औद्योकीकरण क्यों न हो पहले इस व्यवस्था की प्रवृति के परिणाम पर विचार डालना मुख्य बात है। नदी को जिस तर उन्होंने सुरंग के सहारे उसकी दिशा बदलकर उसके उस्तित्व पर खिलवाड़ उसी प्रकार उसका परिणाम भी भयानक रूप से उमड़कर बाहर आ गया।

‘‘‘प्रकृति पर मनुष्य की विजय को लेकर ज़्यादा खुश होने की जरूरत नहीं, क्योंकि ऐसी हर जीत हमसे बदला लेती है। पहली बार हमे वही परिणाम मिलता है जो हमने चाहा था, लेकिन दूसरी और तीसरी दफा इसके ‘अप्रत्याशित प्रभाव दिखाई

 ISSN: 2582 - 2594

पड़ते हैं जो पहली बार के प्रत्याशित प्रभाव का प्रायः निषेध करते हैं।"

"विज्ञान, प्रौद्योगिकी और सूचना तकनीक के जरिए मनुष्य जिस तेजी से लंबी और ऊँची छलांग लगाते हुए लगातार दूरियाँ तय कर रहा है, और उसी अनुपात में प्रकृति के साथ अ-प्राकृतिक मुठभेड़ करते हुए जिन उपलब्धियों पर इतरा रहा है वही वेश बदल कर विभीषिका और त्रासदी के रूप में कब उसके सामने आ जाएँ, वह नहीं जानता।"

निष्कर्ष

समकालीन हिंदी साहित्य ने पर्यावरणीय मुद्दों पर आम जनमानस को जागरूक करने का कार्य किया है।साहित्यिक रचनाएँ पर्यावरण संरक्षण का संदेश देने के साथ-साथ प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता विकसित करती हैं। साहित्यकारों के माध्यम से पर्यावरणीय चेतना का विस्तार और सामाजिक प्रभाव बढ़ाने के प्रयास में वे अग्रसर है।समकालीन हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना का विकास और उसकी प्रासंगिकता।हिंदी साहित्य के माध्यम से पर्यावरण चेतना का प्रचार-प्रसार, जो समाज को जागरूक और संवेदनशील बनाने में सहायक है। भविष्य की संभावनाएँ और समाज में सकारात्मक बदलाव के लिए साहित्य की भूमिका।

संदर्भ सूचि

1. कुँवर नारायण, प्रतिनिधि कविताएँ (पृष्ठ 207) राजकमल प्रकाशन 2008
2. लक्ष्मी नारायण पयोधि, दुर्वा भाग 2 (पृष्ठ 28) प्रकाशन एन.सी.आर.टी संस्करण 2022
3. एस.आर.हारनोट की कहानी 'एक नदी तड़पती है', पर्यावरणीय चेतना की कहानियाँ संपादन डॉ. उषा रानी राँव
4. रोहिणी अग्रवाल की आलोचना, समकालीन हिंदी उपन्यास और पारिस्थितिकीय संकट आगे